सामाजिकसमस्याओंकासिरताजहै- भ्रष्टाचार

Suryakanth
Research Scholar
Department of Hindi, Bangalore University, Bangalore

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सबसे अधिक ध्वनि की गूँज भ्रष्टाचार की सुनायी देती है। वस्तुत: यह आरम्भिक दशा से पनपते, फूलते-फलते आ रहे हैं। समय-समय पर एकाध ध्वनि इस सम्बंध में बुलंद होने पर भी शासन व्यवस्था हो या नेता गण उसपर अधिक ध्यान नहीं देता है क्योंकि वे स्वयं भागीदार होते हैं। इसका प्रभाव केवल साधारण जनता पर पड़ता है और उनकी स्थिति धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का के बराबर रहता है। अत: कोई उस पर गम्भीर चर्चा नहीं करते हैं तथा उसके साथ समझौता करते हुए जीवन गुजार देते हैं। भ्रष्टाचार के कूप में राजा से रंक तक गिरकर तैरना देखने के लिए पाया जाता है। इन लोगों के लिए मानापमान का प्रश्न भी उद्भव नहीं होता है। संस्कृत में एक ओर उल्लेख किया है कि "अर्थातुराणां न भयं न लज्जा'। इससे स्पष्ट होता है कि वाम मार्ग में धनार्जन करनेवाला कभी न डरता है न मान-मर्यादा की परवाह नहीं करता है। इसके अनेक ज्वलंत उदाहरण भी वर्तमान समाज में देखने के लिए प्राप्त होते हैं।

भ्रष्टाचार का निर्मूलन के नाम पर अनेक प्रकार के आंदोलन नाम मात्र के लिए हुए हैं फल तो शून्य निकला। तदर्थ किसी ने इस विषय पर गम्भीर स्वरूप की कारवाही नहीं ली। परिणामतया अधिकारियों में हो या किसी बडे नेता में हो किसी प्रकार का भय न रह और अपने को बचाने के लिए अन्य मार्ग निकाल कर बाहर आ रहे हैं। उनके जेल जाना और आना कोई बडी बात भी नहीं हुई। समय के साथ के साथ लोग भी उसके साथ जुड जाने लगे। भ्रष्टाचार आज एक सामान्य विषय बना हुआ है और बिना पैसे दिये कोई काम नहीं होगा, इस प्रकार की मानसिकता पर लोग उतर चुके हैं। राजा-महाराजाओं के समय में दण्ड विधान अलग था। स्वयं राजा भ्रष्टाचार रहित शासन चलाते थे। तत्कालीन जनता भी राज-दण्ड से डरते थे। साधारण व्यक्ति से लेकर दिवानों तक मेहनत के पैसे में खाते थे। वाम मार्ग की सोच तक उसके मन में नहीं आते थे। राज्य के साथ हर व्यक्ति सुखमय जीवन बिताते थे।

काल परिवर्तन के साथ समाज भी परिवर्तित हुआ। शासन सम्बंधी नीति-नियम बदलने लगे। सभ्य मनुष्य धन-लोलुपता के शिकार बनने लगे। मेहनत के पैसे से अधिक रिश्वत के पैसे अधिक

आने लगे। जीवन-शैली बदलती गयी। स्वयं रिश्वकोर होने के अलावा उच्च अधिकारियों को उसी मार्ग पर ले जाने का क्रम जारी में आया। फलत: साधारण मनुष्य का जीवन बर्बर होने लगा। यह वर्तमान समाज की गाथा है। चिंता इस बात की है कि पूरे देश भ्रष्ट हो चुका है किन्तु न कोई नेता या सम्बंधित न्यायाधिकरण इस पर विचार नहीं कर रहे हैं। भविष्य के दिनों की चिंता किसी के लिए नहीं पथ भ्रष्ट देश को सही पथ पर ले जानेवाले समाज सुधारक भी न रहे। उसका कराल चित्र हमारे सामने उपस्थित है। साहित्यकारों ने इस यथार्थ को अपनी रचनाओं की वस्तु बनायी है। पाठक गण उसे गम्भीर रूप से लेने के बदले में मनोरंजन की दृष्टि लेना देश का दौर्भाग्य है।

व्यंग्य साहित्यकार नाम से ही प्रसिद्ध हरशंकर परसाई ने इस विषय को मार्मिक रूप से प्रस्तावित करने का प्रयत्न किया है। हास्य-वंग्य मिश्रित शैली में भ्रष्टाचार विकृत रूप दर्शाने के प्रयास किया है।

आपके द्वारा रचित 'भोलाराम का जीव' कहानी भ्रष्टाचार का जीता-जागता उदाहरण है। रिश्वतकोरों के कारण एक साधारण सकरार के कर्मचारी बिना पेंशन खाये मृत्यु की शरण में चले जाते हैं। कहानीकार ने उसके जीव के माध्यम से सामाजिक भ्रष्टाचार का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है। उक्त वस्तु के लिए पौराणिक पात्रा का सहारा लेकर उसकी शोभा बढायी है। भोलाराम का जीव जब यमलोक में नहीं आया उससे यमधर्म और चित्र गुप्त घबरा गये और दोनों के बीच में बडी चर्चा होने लगी। इस प्रासंगिकता को लेकर भूलोक भ्रष्टचार का परदा निकाल है- "चित्रगुप्त ने कहा, महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। होजरी के पार्सलों के मोज़े रेलवे अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद ख़राबी करने के लिए तो नहीं उड़ा दिया ?" इस कथन के द्वारा वर्तमान समाज के भ्रष्टचार का निज परिचय कराया है। चित्रगुप्त की बातों में कोई अतिशय भी नहीं है क्योंकि हमारी आँखों के सामने ये सब कुछ हो रहा है। कहानीकार कह रहे हैं और हम सुन रहे हैं। इतने तक कहानीकर चुप न रहे और आगे बढते हुए भ्रष्ट अधिकारिओं की करतूत का नैज चित्र उपस्थित किया है- धर्मराज ने कहा , वह समस्या तो कब की हल हो गई , मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं , जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भर कर पैसा हड़पा जो कभी

काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था , कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इस ने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।" इस कथन से भ्रष्टाचार की व्यापकता का परिचय होता है। जब भोलाराम की समस्या पर विचार करते हैं तब पता चल जाता है कि उनका जीव मृत्युलोक से नहीं आया। इस समस्या का हल करने नारद को पृथ्वी पर भेजते है। नारद पात्र और उनके अनुभवों को भ्रष्टचार के विकृत रूप से जोडना कहानीकार का रचना कौशल का परिचय होता है।पत्नी के पात्र से भोलाराम के घर के वातावरण का परिचय कराया है जो कि- " क्या बताऊँ? ग़रीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख़्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले में विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेच कर हम लोग खा गए। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दी। " इस विदित होगा कि भोलाराम क्यों मरा और उनका जीव इहलोक से परलोक तक क्यों नहीं गया। उसके पेंशन रेकार्ड की बात को लेकर दफ्तरों में होनेवाले रिश्वतकोरों के व्यवहारों का सजीव चित्रण किया है-" साहब बोले , आप हैं बैरागी। दफ़्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने ग़लती की। भई , यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख़्वास्तें उड़ रही हैं। उन पर वज़न रखिए।"

बडे अधिकारी हो या छोटा वजन के बिना काम नहीं करता यह दफ्तरों का सम्प्रदाय हो चुका है। वर्तमान में भी यहीं हाल है। परिवर्तन ही आशा भी नहीं की जा सकती है। नारद ने खुद भोलाराम मामला सेटल करने आगे बढता है। इस प्रकार अत्यंत मर्मस्पर्शी शैली में भोलाराम पात्र के द्वारा देश की शासकीय दुर्वव्यस्था का चित्रण अत्यंत रोचक और व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत करने के साथ पाठकों को इस मामले में सोचने का बाध्य बना दिया है।